
Roll No :- 39

Class No :- 10 Question No :- 1

- *भोग बाबा के प्रति कृतज्ञता का भाव है*
- _ ➤➤ गीता में लिखा है :- *जो व्यक्ति मुझे अर्पित किये बिना ही भोजन स्वीकार करता है ... वह व्यक्ति चोर है*
- _ ➤➤ जिस अन्न का भोग नहीं लगाया जाता है... वह भोजन राक्षसी भोजन है
- *भोग हमारे समर्पण भाव का प्रतीक है*
- स्वाद के प्रति *अनासक्त भाव* जागृत करता है भोग
- *भगवान भोजन का नहीं, भावना का भूखा है ... वह तो अभोक्ता है*
- _ ➤➤ भोग *निस्वार्थ भाव* से लगाया जाना चाहिए
- _ ➤➤ भोग लगाने के बदले भगवान के आगे भिन्न भिन्न *कामनाओं की लिस्ट मत लगाओ ... भगवान से कोई deal मत करो*
- _ ➤➤ भगवान से *प्रेम है, सिर्फ इसलिए भोग लगाओ*

-
- *देह भान से मुक्त होने के लिए अभ्यास :-*
- _ ➤➤ यह देह *अमानत* है
- _ ➤➤ यह देह मैंने *लोन लिया है*
- _ ➤➤ यह देह *रथ* है
- _ ➤➤ इस देह में हम *मेहमान* हैं
- _ ➤➤ इसी देह में अपने फ़रिश्ता स्वरूप को देखें

-
- *Pleasure*
- _ ➤➤ _सांसारिक वस्तुओं_ से
- *Happiness (सुख / खुशी)*
- _ ➤➤ _निस्वार्थ सेवा_ से
- *Joy (आनंद)*
- _ ➤➤ _आत्म अनुभूति_ से
- *Bliss (परमानन्द)*
- _ ➤➤ _परमात्म अनुभूति_ से
- _ ➤➤ *सत चित आनंद स्वरूप अवस्था*
- _ ➤➤ यह *चेतना की सर्वोच्च अवस्था* है
- _ ➤➤ *अतीन्द्रिय सुख* की अनुभूति
- _ ➤➤ _देह के भान से पूरी तरह से दूर_
- *संतोष*

➡ ➡ _ जो है, बस उसी में तृप्त_

➡ _ ➡ *जो नहीं है, उसकी इच्छा समाप्त*

➤➤ *दिन भर में एक तीव्र पुरुषार्थ की क्लास अवश्य सुनो*

➡ ➡ जिससे चेतना जाग जाए

➡ ➡ जिससे अन्दर का सोया हुआ तपस्वी जाग जाए

➤ ➤ *जिसका हम कल्याण करना चाहते हैं*

➡ ➡ ➡ उसके प्रति हमारा कोई *मोह न हो*

➡ ➡ ➡ उससे पूरी तरह से हम *emotionally detach हों*

➡ _ ➡ आप घोड़े को पानी के पास लेकर जा सकते हो, पर उसे ज़बरदस्ती

पानी नहीं पिला सकते... अगर ज़बरदस्त की तो वह भाग जाएगा